The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 4 | November 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

कार्यशील महिलाओं की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 विमला सिंह
सहायक प्रध्यापक (समाजशास्त्र)
कमला नेहरू महाविद्यालय कोरबा (छ.ग.)

ARTICLE DETAILS
Research Paper

Keywords :
कानून और संविधान, पत्नी, मां व गृहणी

ABSTRACT

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व और बाद आम लोगों के बीच महिलाओं को लेकर जो आम धारणाएं थी उनमें काफी परिवर्तन आया है। आज की नारी में तड़प है आगे बढ़ने की, समाज के हर क्षेत्र में कुछ कर दिखाने की, आज स्थिति यह है कि कानून और संविधान में प्रदत्त अधिकारों का संबल लेकर नारी अधिकारिता के लंबे सफर में कई मील पत्थर पार कर चुकी है, कई मोर्चे पर उसने प्रमाणित कर दिखाया है कि वह किसी से कमतर नहीं बेहतर है। आज कार्यशील महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी पड़ रही है – एक भूमिका पत्नी, मां व गृहणी की तथा दूसरी भूमिका नौकरी की। घर और नौकरी दोनों की दोहरी मांगों व तनावों के कारण अधिक समस्याएं पैदा हो जाती है, यह समस्या इसीलिए उत्पन्न होती है, क्योंकि वह दोनों भूमिकाओं में ताल–मेल नहीं कर पाती है । घर और बाहर दोनों जगहों के उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक निभाने की उसकी अभिलाषा की वजह से उसके अंतर्मन में भी संघर्ष और तनाव पैदा होते रहते हैं ।

कार्यशील महिला से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो वेतन प्राप्त कार्य अर्थात नौकरी में लगी है, आज की बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं द्वारा नौकरी करने को प्रायः बुरा या अपमानजनक नहीं माना जाता है। अब पत्नियों द्वारा नौकरी करने को समाज आपत्तिजनक नहीं मानते हैं। यहां तक की बड़े बूढ़े भी यह चाहने लगे हैं कि उनकी

बहुएं परिवार की आमदनी में सहयोग करें। इसमें कोई शक नहीं की आर्थिक कठिनाइयों की वजह से बहुत सी स्त्रियां व्यवसाय या नौकरियां कर रही है।

आज प्रत्येक क्षेत्र में महिलायें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है। केवल शिक्षा, नर्सिंग, चिकित्सा, कानून, न्याय आदि में ही नहीं अपितु वायुयान संचालन में भी वे पुरुषों के समकक्ष खड़ी है। महिलायें मानसिक और शारीरिक राष्ट्रीय तथा सामाजिक प्रत्येक क्षेत्र में भाग ले रही हैं, घरेलू कार्य का भी अपना क्षेत्र है जो की महत्वपूर्ण है उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। आज ये घर की चार दीवारों में बंद न रहकर बाहर की खुली हवा में विचरण कर पुरुषों के समान धनोपाजर्न करना अधिक महत्वपूर्ण समझती जा रही है। आज जीवन के संघर्षों से सामना करना एवं नौकरी करना महिला भी उतना ही परमधर्म समझती है जितना कि पुरुष।

महिलायें समाज की आधार और मेरुदंड है और जिस देश व काल में इनके प्रति औचित्यपूर्ण संतुलित विचार रखा जाता है वह देश उत्तरोत्तर उन्नतिशील होता जाता, है व महिलाएं मानव के सामाजिक जीवन की रीढ़ है। परिवार की केंद्र–बिंदु महिला ही होती है, समाज को संस्कृत बनाने का श्रेय महिला को ही जाता, है वह माता, पत्नी एवं बहू के रूप में पूरे परिवार को संस्कारित करती है ।

आधुनिक काल में आर्थिक उत्पादन में महिलाएं पुरुषों के साथ–साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। आज महिला पुरुषों के समानतर या उससे कही अत्यधिक श्रम करने के बावजूद निरंतर उपेक्षा एवं व्यक्तित्वहीनता की शिकार क्यों नहीं बनी हुई है? वह अपने अधिकार को प्राप्त करने में असहाय होकर पुरुषों पर आश्रित क्यों हो चली है? आज महिला पढ़ लिखकर स्वयं आत्मनिर्भर हो गयी है। मगर उसे फिर भी पूरे परिवार के सदस्यों के लिए उत्तरदायी कराया जाता है। महिला अपने बच्चों की देख–रेख से लेकर परिवार के सारे कार्य के बाद सही समय पर कार्यस्थल पर पहुंचना होता है, किसी–किसी का कार्यस्थल घर से 40 किलोमीटर दूर स्थित होता है, महिलाओं को एक साथ दो जिम्मेदारियां को निभाना पड़ता है। ये अपने इस कार्य में इतनी ज्यादा व्यस्त रहती हैं कि वह आराम और अपने बारे में कुछ सोच ही नहीं पाती है।

अध्ययन पद्धति –

प्रस्तुत अध्ययन में कोरबा जिला (छत्तीसगढ़) के नगरीय क्षेत्रों में 120 उत्तरदाता महिलाओं जो स्कूल, कॉलेज, बैंक, न्यायालय, थाना, जिला पंचायत, अस्पताल में कार्यरत है इनका सविचार उद्देश्य पूर्ण निर्देशन प्रणाली द्वारा चयन किया गया है, उत्तरदाताओं के चयन में इस तथ्य को ध्यान में रखा गया है कि वे संपूर्ण क्षेत्र एवं सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिए पूर्णतः सक्षम है। इस नगरीय क्षेत्र में विभिन्न स्रोतों, क्षेत्रों धर्मो एवं जातियों के लोग निवास करते हैं। अनुसंधान की विषय वस्तु के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोध के क्षेत्र का चुनाव किया गया है। कार्यशील महिलाओं की स्थिति

के अध्ययन में उनकी वैवाहिक स्थिति, परिवारिक जीवन में सामंजस्य की समस्या, बच्चों के लिए समय निकाल पाना, नौकरी करने के कारण, मानसिक तनाव आदि का अध्ययन किया गया हैं।

उद्देश्य –

1. कार्यशील महिलाओं की वैवाहिक स्थिति का अध्ययन करना ।
2. कार्यशील महिलाओं के पारिवारिक जीवन में सामंजस्य की समस्या का अध्ययन करना ।
3. कार्यशील महिलाओं द्वारा बच्चों के लिए पर्याप्त समय निकाल पाते हैं कि नहीं, का अध्ययन करना।
4. कार्यशील महिलाओं के द्वारा नौकरी करने के कारणों का अध्ययन करना।
5. कार्यशील महिलाओं को मानसिक तनाव का अध्ययन करना।

वैवाहिक स्थिति –

विवाह मानव कि आवश्यकता है लैंगिक संबंध को बनाये रखने के लिए विवाह का महत्व है विवाह प्रत्येक समाज का आवश्यक अंग है चाहे वह आदिम समाज हो या सभ्य समाज, प्रत्येक समाज में सामाजिक तथा सांस्कृतिक नियमों का प्रभाव विवाह पर पड़ता है जिसके कारण उद्देश्यों में विभिन्नता आती है, ''विवाह एक संस्कार है'' [1]

''विवाह सामाजिक आदर्शों नियमों की एक संमग्रमा है जो विवाहित व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों को उनके रक्त संबंधियों और अन्य नातेदारों के प्रति परिभाषित करती हैं और उन पर नियंत्रण रखती है।'' [2]

तालिका क्रमांक – 1

वैवाहिक स्थिति

क्रमांक	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विवाहित	81	67.5
2.	अविवाहित	30	25
3.	विधवा	4	3.4
4.	तलाकशुदा	3	2.5
5.	परित्यक्ता	2	1.6
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 67.5 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित है, 25 प्रतिशत अविवाहित, 3.4 प्रतिशत विधवा, 2.5 तलाकशुदा, 1.6 प्रतिशत परित्यक्ता है।

कार्यशील होने से पारिवारिक जीवन में सामंजस्य की समस्या –

आज कार्यशील महिला अपने बच्चों के पालन – पोषण के साथ–साथ परिवार के वृद्धजनों की देखभाल, खाना पकाना तथा अपने कार्यस्थल पर सही समय पर जाना। इनके घर परिवार तथा

पड़ोस के लोगों से पूछे तो वह बोलते हैं ''वे कार्यस्थल में भी बैठी रहती हैं और घर में भी, कुछ काम नहीं करती।'' दुर्भाग्य की बात है कि सभी कुछ करने के बाद इनके काम का मूल्यांकन ''कुछ काम नहीं'' में होता है। सूर्योदय से काफी पहले से लेकर सूर्यास्त के काफी बाद तक जो करती रहती है, उसे काम की परिभाषा में शामिल नहीं किया जाता।

कार्यशील महिला को परिवार में भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्यशील महिला के पास समय का अभाव होने के कारण वह परिवार में पूरा समय नहीं दे पाती है जिससे कि उसके बच्चों का घर के सदस्यों के साथ उसको सामंजस्य में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

तालिका क्रमांक – 2

पारिवारिक जीवन में सामंजस्य की समस्या

क्रमांक	सामंजस्य	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	90	75
2.	नही	30	25
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है 75 प्रतिशत उत्तरदाताओं के कार्यशील होने से परिवार में तनाव की स्थिति बनी रहती है, क्योंकि वह कार्यस्थल और परिवार के कार्य को उत्तरदायित्व पूर्णतः नहीं निभा पाती है। 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में तनाव की स्थिति नहीं बनती है।

बच्चों के लिए पर्याप्त समय निकाल पाना –

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आज भी महिला का प्रथम कर्तव्य और स्थान उसका घर – परिवार वह बच्चे ही हैं । कार्यशील महिलाओं की सबसे बड़ी समस्या होती है, कि वह अपने बच्चों के प्रति पुरा ध्यान नहीं दे पाती हैं। इनकी जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने नौकरी के साथ–साथ अपने बच्चों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के लिए भी समुचित समय निकाले और उसकी तरफ पूर्ण ध्यान दें।''

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''पश्चिम देश की नारी पहले पत्नी है फिर माँ है, जबकि भारत की नारी पहले माँ है फिर पत्नी है।''[3]

तालिका क्रमांक – 3

बच्चों के लिए समय निकाल पाना

क्रमांक	समय निकाल पाना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हां	15	16.6
2.	नहीं	75	83.4
	कुल योग	90	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 83.4 प्रतिशत उत्तरदाता बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पाती, क्योंकि नौकरी करने के कारण शाम को थकान का अनुभव करती है तथा घर के कार्य का भी भरा होता है, 16.6 प्रतिशत उत्तरदाता समय निकाल लेती हैं।

नौकरी करने के कारण –

''शिक्षित और प्रशिक्षित महिलाएं किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। भारत में तो महिलाओं को आर्थिक रूप से उपयोगी बनाने तथा अधिक से अधिक कार्य से जोड़ने की आवश्यकता को और भी अधिक महसूस किया जा रहा है।''[4]

तालिका क्रमांक – 4

नौकरी करने के कारण

क्रमांक	कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आर्थिक सहयोग के लिये	89	74.2
2.	समय के सदुपयोग के लिए	15	12.5
3.	सामाजिक कल्याण के लिये	6	5
4.	विशेष रूचि के कारण	10	8.3
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की 74.2 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार की आर्थिक सहयोग की दृष्टि से नौकरी करते हैं, क्योंकि आधुनिक युग में बच्चों की शिक्षा में काफी धन लग जाता है। 12.5 प्रतिशत समय के सदुपयोग के लिए, 8.3 प्रतिशत विशेष रुचि के कारण, 5 प्रतिशत सामाजिक कल्याण के लिए नौकरी कर रही है।

मानसिक तनाव महसूस करना –

कार्यशील महिलाओं द्वारा घर व कार्यस्थल पर संतुलन को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

घर और नौकरी दोनों जगहों के उनके उत्तरदायित्वों में पारस्परिक संघर्ष की स्थिति पाई जाती है। नौकरियों में सफलता के लिए पूरी तमन्नता की आवश्यकता होती है। योग्यता और प्रतिभा रखते हुए भी महिला पुरुष से प्रायः मात खा जाती हैं, क्योंकि घर– गृहस्थी बच्चों, पति आदि से संबंधित जिम्मेदारियां भी उन्हें निभानी पड़ती है। इससे उन्हें मानसिक तनाव से गुजरना पड़ता है विशेषकर उस स्थिति में जब वे घर तथा नौकरी की जिम्मेदारियों को साथ–साथ और अच्छी तरह से निभाना चाहती है मानसिक तनाव की तीव्रता उस परिस्थिति में और भी बढ़ जाती है जिसमें महिला को अपनी नौकरी की जिम्मेदारी निभाने में अपना स्वयं ध्यान केंद्रित करना पड़ता है और दूसरी तरफ उसे ऐसा आभास होता है कि अपने उत्तरदायित्वों की वजह से वह अपने पति और बच्चों को समुचित ध्यान नहीं रख पा रही हैं।

''कार्यशील महिलाये घर और नौकरी दोनों जगहों की जिम्मेदारियों के पाटों में अपने को पिसती पाती हैं। दो नावों पर चढ़ने के उपक्रम में उन्हें असीम तनाव और थकान की स्थिति से गुजरना पड़ता है, जो पारिवारिक असंगतियों को उत्पन्न करती है।''[5]

इंदिरा गांधी ने कहा था ''किसी भी वर्ग में महिलाएं सबसे अधिक शोषित है। महिलाओं के संपूर्ण विकास में कई तरह की बाधाएं आती है इसकी सबसे बड़ी वजह है, मानसिक गतिरोध। पुरुषों का मानसिक रवैया जो समाज ने उसके मन में बैठा दिया है, वह बांधक बनता है। महिलाओं को चाहे वे किसी भी तबके की हो उन्हें जरूरत है अपने अधिकारों के प्रति जागृत होने की।''[6]

तालिका क्रमांक – 5

मानसिक तनाव के प्रकार

क्रमांक	तनाव के प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	चिड़चिड़ापन	71	59.2
2.	निराशा	11	9.2
3.	वेतन संबंधी	16	13.3
4.	पक्षपात होने पर ईष्या का भाव	22	18.3
	कुल योग	120	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 59.2 प्रतिशत उत्तरदाता चिड़चिड़ापन, 18.3 प्रतिशत पक्षपात होने पर ईष्या का भाव, 13.3 प्रतिशत वेतन संबंधी, 9.2 प्रतिशत उत्तरदाता निराशा महसूस करते हैं।

सुझाव –

1. कार्यशील महिलाओं के व्यक्तित्व और उनके पारिवारिक जीवन ढांचों में जो अपरिहार्य परिवर्तन आ रहे हैं, वे यह मांग करते हैं, कि जीवन का सामंजस्य न केवल पति और पत्नी के विचारों और व्यवहार में, अपितु परिवार के सभी सदस्यों के विचारों और व्यवहार में भी उत्पन्न हो।
2. परम्पराओं से जकड़े पुरुषों और पतियों के मन में कुछ ऐसी धारणाएं और भावनाएं गहरे रूप से बैठी हैं, जिन्हें बदलना होगा। पतियों का यह भ्रम भी दूर करना होगा की आवश्यकता पड़ने पर पुरुषों को घर के कार्यों में रुचि लेना और सहयोग देना उन्हें समाज की नजरों में गिराता नहीं है।
3. कार्यशील महिलाये निरंतर कार्य की थकान के बाद कभी–कभी कुछ दिन छुट्टियां मनाने का प्रोग्राम बनाएं, ताकि बदलाव से, मनोरंजन से मानसिक तनाव कम हो।
4. कार्यशील महिलायें को प्रतिकूल परिस्थितियों में अधिक धैर्य, अधिक सूझबूझ से काम लेना चाहिए।

5. कार्यशील महिलाएं परिवार के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक जीवन में जो योगदान दे रही हैं, और देने की क्षमता रखती हैं, इनके प्रति लोगों में और ज्यादा समझदारी पैदा करने की जरूरत है।
6. कार्यशील महिलाओं की समस्या को लेकर एक सघन अभियान के रूप परिवार व कार्य स्थल दोनों जगह पर सहयोग की भावना होनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. कापड़िया के. एम., मैरेज एण्ड फैमिली इन इंडिया, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर, पृष्ठ– 395, सन 2000.
2. बोगार्डस ई. एस. , सोसायालॉजी ए गाइड टु प्रॉब्लम एण्ड लिटरेचर, ब्लैक, फ्रायर्स प्रेस लिमिटेड लेसिस्टर, पृ.– 255 सन 1976.
3. जड़िता प्रभावती, हिंदू नारीः कार्यशीलता के बदलते आयाम, अर्जुन पब्लिशिंग आयाम, पृ.–07 सन 2009.
4. कपूर प्रमिला, कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ–38, सन 1976.
5- गुप्ता सुभाषचंद्र, कार्यशील महिलाएं एवं भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ–57, सन 2004.
6- लॉरेन्स जास्मिन, महिला श्रमिक सामाजिक स्थिति एवं समस्याएं, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ. –11, सन 2009.